प्रातः क्लास 18/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। बाप आकर तुम रूहानी बच्चों को क्या कहते हैं, क्या सेवा करते हैं? इस समय में इस पढ़ाई की सेवा करते हैं। यह भी तुम जानते हो उनका बाप का भी पार्ट है, टीचर का भी पार्ट है और सद्गुरु का भी पार्ट है। तीनों पार्ट अभी बजा रहे हैं। तुम बच्चे जानते हो वह बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गति देने वाला गुरु भी है और सभी के लिए है। छोटे-बड़े, बूढ़े-जवान सभी के लिए एक ही है। सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर है। बेहद की शिक्षा देते हैं। तुम कॉनफ्रेन्स भी समझा सकते हो कि हम सभी के बायोग्राफी को जानते हैं। परमपिता परमात्मा शिवबाबा की जीवन-कहानी को भी जानते हैं। नम्बरवार सभी की बुद्धि में याद होनी चाहिए। सारा विराट रूप ज़रूर बुद्धि में रहता है। हम अभी ब्राह्मण बने हैं फिर हम देवता बनेंगे। वैश्य, शूद्र बनेंगे। यह तो बच्चों को याद है ना। सिवाय तुम बच्चों के और किसको यह बातें याद न होंगी। उत्थान और पतन का सारा राज बुद्धि में रहे। हम उत्थान में थे। फिर पतन में आए। अभी बीच में हैं। शूद्र भी नहीं हैं, ब्राह्मण भी नहीं हैं। पूरे ब्राह्मण नहीं बने हैं। अगर अभी ब्राह्मण बने हो तो फिर शूद्रपने की एक्ट न हो। ब्राह्मण होने भी शूद्रपने की छी-छी अवस्था हो जाती है। स्मृति में वह शूद्रपना आ जाता है। यह भी तुम जानते हो कब से पाप शुरू किए हैं। जबसे काम चिक्षा पर चढ़े हो। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। ऊपर में है परमपिता परमात्मा। बाप। फिर तुम आत्माएँ हो। यह बातें तुम बच्चों की बुद्धि में ज़रूर याद रहनी चाहिए। अभी हम ब्राह्मण बने हैं। देवता बन रहे हैं फिर क्षत्रिय डिनायस्टी में आवेंगे। फिर वैश्य, शूद्र डिनायस्टी में आवेंगे। बाप आकर हमको शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। फिर हम ब्राह्मण से देवता बनेंगे। ब्राह्मण बनकर कर्मातीत अवस्था को पाए फिर हम वापस जावेंगे। तुम बाप को भी जानते हो, बाजोली वा 84 के चक्र को भी जानते हो। बाजोली से तुमको बहुत सहज कर समझाते हैं। तुमको बहुत हल्का बनाते हैं, ताकि अपन को बिन्दी समझ और झट भागेंगे। स्टूडेंट क्लास में बैठे रहते हैं तो बुद्धि में स्टडी ही याद रहती है। तुमको भी यह पढ़ाई याद रहनी चाहिए। अभी हम संगमयुग पर है फिर ऐसे चक्र लगावेंगे। यह चक्र सदैव बुद्धि में फिरता रहना चाहिए। यह चक्र आदि का नॉलेज तुम ब्राह्मणों पास ही है। न शूद्रों पास, न देवताओं पास यह ज्ञान है। अभी तुम समझते हो भक्तिमार्ग में जो भी चीज़ें बनी हैं सभी डिफेक्टेड हैं। तुम्हारे पास है एक्युरेट; क्योंकि तुम एक्युरेट बनते हो। शास्त्रों में तो बहुत झूठी कहानियाँ लगा दी हैं। ऐसी-2 बातें कोई होती थोड़े ही हैं। वह सभी है भक्तिमार्ग का खेल। अभी तुमको ज्ञान मिला है तब समझते हो भक्ति किसको कहा जाता है, ज्ञान किसको कहा जाता है। ज्ञान देने वाला बाप ज्ञानसागर अभी मिला है। स्कूल में पढ़ते हैं, एम-ऑबजेक्ट का पता तो पड़ता है ना। भक्तिमार्ग में तो एम-ऑबजेक्ट होता ही नहीं। यह थोड़े ही तुमको मालूम था हम ऊँच देवता थे फिर नीचे गिरे हैं। अभी जब ब्राह्मण बने हैं तब पता पड़ा है। ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ ज़रूर आगे भी बनी थीं। प्रजापिता ब्रह्मा का नाम तो बाला है ना। उनके इतने ढेर बच्चे हैं, ज़रूर एडॉप्ट होने चाहिए। कितने एडॉप्टशन हैं। आत्मा के रूप में तो सभी भाई-2 हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि कितनी दूर जाती है। तुम जानते हो जैसे ऊपर में स्टार्स खड़े हैं, दूर से कितनी छोटी दिखाई पड़ती है, तुम भी बहुत छोटी सी आत्मा हो। आत्मा कब छोटी-बड़ी नहीं होती है। हाँ, तुम्हारा मर्तबा ऊँच है। उनको भी सूर्य देवता, चंद्रमा देवता कहते हैं। सूर्य बाप, चंद्रमा माँ कहेंगे। बाकी नक्षत्र सितारे ही सितारे हैं। तो आत्माएँ सब एक जैसी छोटी सितारे हैं। यहाँ आकर पार्टधारी बनती हैं। यह पार्ट कब फिरता-विरता नहीं है। देवताएँ तुम ही बनते हो ना। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चंद्रमा, ज्ञान सितारे। यह ज्ञान ही बातें हैं। वह सूर्य, चाँद, सितारे तो रोशनी देने वाले हैं। ज्ञान की बात नहीं। अभी तुम मीठे-2 बच्चे जानते हो हम बहुत पावरफुल बन रहे हैं। बुद्धि में आता है बाप को याद करने से हम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। आत्माएँ तो सभी हैं; परन्तु नम्बरवार थोड़ा-2 फर्क तो रहता है। कोई आत्मा पवित्र बन सतोप्रधान देवता बन जाती है, कोई आत्मा पवित्र बनती नहीं है। ज्ञान को ज़रा भी

नहीं जानते। बाप ने समझाया है बाप का परिचय तो ज़रूर सभी को मिलना ही है। पिछाड़ी में बाप को तो जानेंगे ना। पिछाड़ी में सभी को पता पड़ता है बाप आया हुआ है। अभी भी कोई-2 कहते हैं भगवान ज़रूर आया हुआ है; परन्तु पता नहीं पड़ता। समझते हैं कोई भी रूप में आवेगा। मनुष्यमत तो बहुत हैं ना। तुम्हारी है एक ही ईश्वरीय मत। तुम ईश्वरीयमत से क्या बनते हो! एक है मनुष्य मत। ईश्वरीय मत और देवता मत। देवताओं को यह मत किसने दी? बाप ने। बाप की श्रीमत है ही श्रेष्ठ बनाने की। श्री श्री बाप को ही कहेंगे, न कि मनुष्य को। श्री श्री ही आकर श्री बनाते हैं। देवताओं को श्रेष्ठ बनाने वाला बाप ही है। उनको श्री-2 कहेंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसा लायक बनाता हूँ। उन लोगों ने फिर अपने पर श्री श्री का टाइटल रख दिया है। कॉनफ्रेन्स में भी तुम समझा सकते हो। तुम ही समझाने लिए निमित्त बने हुए हो। यह तमोप्रधान पतित मनुष्य, वह फिर अपने ऊपर श्री श्री का टाइटिल रखाते हैं। श्री श्री तो है ही एक शिवबाबा, जो ऐसा श्री देवता बनाते हैं। मनुष्य को श्री भी नहीं कह सकते। आजकल तो बंदरों को भी श्री श्री का टाइटल दे दिया है। यह भी तुमको अभी समझ में आता है। तुमको तो बाप ऐसा श्रेष्ठ देवता बनाते हैं। वह लोग शास्त्रों आदि की पढ़ाई पढ़कर टाइटिल लेते हैं। तुमको तो श्री श्री बाप ही श्री अर्थात श्रेष्ठ बना रहे हैं। यह है ही तमोप्रधान भ्रष्टाचारी दुनिया। भ्रष्टाचार से ही जन्म लेते हैं। इसलिए गाया भी जाता है अंधेर नगरी चौपट..... घोर अंधियारा है ना। राजा आदि तो है नहीं। ज्ञान बिगर मनुष्य चर्ये, मैडचैप्स हैं। कहाँ बाप का टाइटिल, कहाँ पतित मनुष्य अपने पर रखाते हैं। सच-2 महान आत्माएँ तो देवी-देवताएँ हैं ना। सतोप्रधान दुनिया में कोई भी तमोप्रधान हो न सके। रजो में रजो मनुष्य ही रहेंगे, न कि तमोगुणी। वर्ण भी गाए जाते हैं। अभी तुम समझते हो आगे तो हम कुछ भी नहीं समझते थे। यह बाबा कितना समझदार बनाते हैं। तुम कितना धनवान बनते हो। शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। शिवबाबा का भण्डारा कौन सा है? अविनाशी ज्ञान रत्नों का। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर। बाप तो बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं। खुद है सागर। शिवबाबा का ज्ञान रत्नों का भण्डारा भरपूर है। तुमको ज्ञान रत्न देते हैं तो काल कंटक सब दूर हो जाते हैं। बच्चों की बुद्धि बेहद में जानी चाहिए। 500 करोड़ आत्माएँ हैं, वह सभी अपने-2 रूप में तख्त पर विराजमान हैं। यह बेहद का नाटक है ना। आत्मा इस तख्त पर विराजमान होती है। तख्त एक न मिले दूसरे से। सभी के फिचर्स अलग-2 हैं। इनको कहा जाता है कुदरत। हरेक का कैसा अविनाशी पार्ट है। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का रिकार्ड भरा हुआ है। सूक्ष्म ते सूक्ष्म है। इनमें सूक्ष्म वण्डर कोई हो नहीं सकता। इतनी छोटी सी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है, जो यहाँ ही पार्ट बजाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो कोई पार्ट बजाते ही नहीं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप द्वारा तुम सभी कुछ जान जाते हो। यही नॉलेज है। ऐसे नहीं कि सभी के अन्दर को जानने वाला है। वही नॉलेज जानते हैं जो तुम्हारे में मर्ज हो रही है, जिस नॉलेज (से) ही तुम इतना ऊँच पद पाते हो। यह भी समझ रहती है ना। बाप है बीजरूप। उनमें सारी झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज है। मनुष्यों ने तो लाखों वर्ष आयु दे दी है। तो ज्ञान आ न सके। अभी तुमको संगम पर यह सारा ज्ञान मिल रहा है। बाप द्वारा तुम सारे चक्र को जान जाते हो। इनके पहले तुम कुछ नहीं जानते थे। अभी तुम संगम पर हो। यह है तुम्हारा अन्त का जन्म। पुरुषार्थ करते-2 तुम ब्राह्मण बन जावेंगे। अभी नहीं हो। अभी तो अच्छे-2 बच्चे भी ब्राह्मण से फिर शूद्र बन जाते हैं। इसको कहा जाता है माया से हार खाना। बाबा के गोद से मरकर माया रावण के गोद में चले जाते हैं। कहाँ बाप की श्रेष्ठ बनने की गोद, कहाँ रावण की भ्रष्ट बनने की गोद। सेकण्ड में जीवनमुक्ति, तो सेकण्ड में पूरी दुर्दशा हो जाती है। ब्राह्मण बच्चे अच्छी रीत जानते हैं कैसे दुर्दशा हो जाती है। आज बाप के बनते कल फिर माया के सपोट में आकर रावण के बन जाते हैं। फिर तुम बचाने की कोशिश करते हो, तो कोई-कोई बच भी जाते हैं। तुम देखते हो,

डुबोते हैं तो बचाने की कोशिश करते हो। कितनी खिट-2 होती है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यहाँ स्कूल में तुम पढ़ते हो ना। तुमको मालूम है कैसे हम चक्र लगाते हैं। तुम बच्चों को श्रीमत मिलती है ऐसे-ऐसे करो। भगवानुवाच तो ज़रूर इनकी श्रीमत हुई ना। मैं अभी तुम बच्चों को शूद्र से देवता बनाने आया हूँ। अभी कलियुग में है शूद्र सम्प्रदाय। तुम जानते हो कलियुग पूरा हो रहा है। तुम संगम पर बैठे हो। यह बाप द्वारा तुमको नॉलेज मिली है। शास्त्र जो भी बनाई है इन सभी में है मनुष्य की मत। ईश्वर तो शास्त्र बनाते ही नहीं। एक गीता के ऊपर ही कितने नाम रख दिए हैं। गाँधी गीता, टैगोर गीता..... ढेर नाम हैं। गीता को मनुष्य इतना क्यों पढ़ते हैं? समझते तो कुछ भी नहीं हैं। अध्याय वही उठाकर अर्थ अपना करते हैं। वह तो सभी मनुष्यों की बनाई हुई हो गई ना। तुम कह सकते हो मनुष्य मत की बनाई हुई गीता से भारत का पतन होता है। श्रीमत से मनुष्य से देवता बन सकते हो। मनुष्यों की बनाई हुई गीता पढ़ने से आज यह हाल हुआ है। गीता ही पहला नम्बर का शास्त्र है ना। वह है देवता धर्म का शास्त्र। यह तुम्हारा ब्राह्मण कुल का है। यह भी ब्राह्मण धर्म है ना। कितने धर्म हैं। जिस जिसने जो धर्म रचा है उनका वह नाम चलता है। जैसे जैनी धर्म। चित्र तो वही है। जिसे जैनी लोग महावीर कहते हैं। तुम बच्चे हो महावीर–महावीरणियाँ हो। तुम्हारा ही मंदिर में यादगार है। राजयोग है ना। यह तो बहुत सहज है। नीचे योग तपस्या में बैठे हैं, ऊपर में राजाई का चित्र है। राजयोग का एक्युरेट मंदिर है। फिर कोई ने क्या नाम रख दिया है, कोई ने क्या नाम रख दिया है। यादगार है बिल्कुल एक्युरेट। बुद्धि से काम ले ठीक बनाया है। फिर जिसने जो कहा वह नाम रख दिया है। यह मॉडल रूप में बनाया है। स्वर्ग और राजयोग संगम का बनाया हुआ है। स्वर्ग तो मनुष्यों को इन आँखों से देखने में नहीं आता है तो देवी-देवताओं को छतों में दिखाया है। तुम आदि-मध्य-अंत को जानते हो। आदि को भी तुमने देखा है, आदि संगमयुग कहो या सतयुग कहो। संगमयुग की ह.... सीन नीचे दिखाई है। फिर राजाई ऊपर में दिखाई है। आदि फिर मध्य में है द्वापर। अन्त को तो तुम देखते हो, यह भी खत्म हो जाना है। पूरी यादगार बनी हुई है। देवी-देवताएँ ही फिर वाममार्ग में जाते हैं। द्वापर से वाममार्ग शुरू होता है। तो यादगार पूरा एक्युरेट है। बहुत मंदिर हैं। यादगार में बहुत मंदिर बनाए हैं। यहाँ ही सभी निशानियाँ हैं। मंदिर भी यहाँ ही बनते हैं। देवी-देवताएँ भारतवासी ही राज्य करके गए हैं ना। फिर बाद में कितने मंदिर बनाई हैं। सिक्ख लोग बहुत होंगे तो अपना मंदिर बना देंगे। मिलिट्री वाले भी अपना मंदिर बना देते हैं। भारतवासी अपने कृष्ण का, ल॰ना॰ का मंदिर बनावेंगे। हनुमान गणेश का बनावेंगे। यह सारा सृष्टिचक्र कैसे फिरता है, कैसे स्थापना-पालना-विनाश होती है यह भी तुम जानते हो। इसको कहा जाता है अंधियारी रात। रात और दिन गाया जाता है ना। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात; क्योंकि ब्रह्मा ही चक्र में आते हैं। अभी तुम ब्राह्मण हो फिर देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। मुख्य तो ब्रह्मा हुआ ना। ब्रह्मा का रखें वा विष्णु का रखें। ब्रह्मा है रात का, विष्णु है दिन का। वह रात से फिर दिन में आते हैं। दिन से फिर 84 जन्मों बाद रात में आते हैं। कितनी सहज समझानी है। सो भी पूरा याद नहीं कर सकते। पूरी रीत नहीं पढ़ते हैं। तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पद पाते हैं। जितना याद करेंगे उतना ही सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान में कैसे आते हैं फिर सतोप्रधान कैसे बनते हैं यह समझने का है। भारत सतोप्रधान सो फिर भारत तमोप्रधान। बच्चों में कितना ज्ञान है। यह नॉलेज सिमरण करनी है। यह ज्ञान है ही नई दुनिया के लिए, जो बेहद का बाप ही आकर देते हैं। बेहद के बाप को जानते ही नहीं हैं, तो जानवर ठहरे ना। देहधारी बाप को तो सभी जानते हैं। सभी मनुष्य बेहद के बाप को याद करते हैं। अंग्रेज लोग भी कहते हैं ओ गॉड फादर। लिबरेटर गाइट। अर्थ तो तुम बच्चों की बुद्धि में है। बाप आ करके दुख की दुनिया, आयरन एज से निकाल कर गोल्डन एज में ले जाते हैं। गोल्डन एज ज़रूर पास होकर गए हैं तब तो याद करते हैं ना। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिए और फिर

दैवी कर्म भी करनी चाहिए। कोई भी आसुरी कर्म करेंगे तो मनुष्य मानेंगे ही नहीं। कहेंगे, करते क्या हैं, समझाते क्या हैं। अभी सभी हैं आसुरी मनुष्य। तुमको देवताओं जैसा बनना है। तुम बच्चों को खुशी भी होती है, अभी हम अपने घर जावेंगे, फिर अपनी राजधानी में आवेंगे। 84 जन्मों का चक्र लगाकर फिर पतित बनना है। फिर बाप आकर पावन बनाते हैं। उनको कहा ही जाता है सतयुग। पावन दुनिया। इनको कहा जाता है कलियुग पतित दुनिया। बदली होने का समय अभी संगमयुग है। इनका ही तुम बच्चों का ही पता है। इन बातों को समझेंगे भी वही जिन्होंने कल्प-2 समझा है। यह सारा ज्ञान बच्चों को स्मृति में होना चाहिए। बाबा में नॉलेज है ना। इसमें प्रवेश कर तुमको भी नॉलेज देते हैं। तुम सभा में भी कह सकते हो इस मनुष्य सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष की नॉलेज हम दे सकते हैं। उनका बीज ऊपर में है, जिसको सत्–चित्त, नॉलेजफुल कहते हैं। उनके पास जो सारी नॉलेज है वह हम जानते हैं। बाप ने हमको समझाया है ऐसे-2 समझाना है जो समझे बरोबर यह ज्ञान तो बाप ही दे सकते हैं। इस ज्ञान से ही सभी की सद्गति होती है। पानी की गंगा पर भक्त लोग जाकर बैठते हैं, समझते हैं हम पावन बन जावेंगे। तुम नहीं बैठेंगे। तुम समझते हो ज्ञान और भक्ति में रात-दिन का फर्क है। अभी इस पतित दुनिया का ही अन्त है। अभी तो वापस जाना है।

यह नॉलेज ही है ईश्वरीय ज्ञान रत्न, जिससे शिवबाबा का भण्डारा भरपूर है। तुमको यह ज्ञान रत्न देते हैं जिससे तुम वह बनते हो। अभी कोई लेवे और धारणा की। म्युज़ियम में जाकर कहते हैं ना झोली भर दो। मंदिर में जाकर कहते हैं ना झोली भर दो। लक्ष्मी के आगे कब ऐसे नहीं कहेंगे। उनकी पूजा करते हैं समझते हैं लक्ष्मी धन देती है। इन सभी बातों को तो मनुष्य समझते ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो हम भी कितने बेसमझ थे। अभी सतोप्रधान, समझदार बन रहे हैं। फिर से हम देवता बनेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो है ही। नॉलेज कितनी सहज है। सृष्टिचक्र को जानना यही तो नॉलेज है ना। अर्थात् स्व आत्मा चक्रधारी बनती है। उनमें सारी नॉलेज है और कोई कह न सकेंगे तुम स्वदर्शनचक्रधारी हो। वह तो अर्थ ही नहीं समझते। उन्होंने फिर समझा है स्वदर्शनचक्र से सभी का गला कटता है। चक्र विष्णु को और कृष्ण को देते हैं। ऊँच ते ऊँच को फिर नीचे अहिंसक बना दिया है। भारत का ही स्वर्ग नाम था। अभी क्या बन गया है! अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। अविनाशी ज्ञान रत्नों से भण्डारा भरपूर हो जाता है, जिससे तुम मालामाल बनते हो। और कोई चीज़ नहीं देते हैं। ज्ञान से ही सद्गति होती है। तुमको इस सारे चक्र का मालूम है। तुम मोस्ट वैल्युएबुल हो। तुम्हारे जैसा वैल्युएबल कोई नहीं। पढ़ाई से तो मेहतर भी एम॰पी॰ बन जाते हैं। फिर सभी इकट्ठे रहते हैं। मालूम थोड़े ही पड़ता है। फिर मेहतरपना कहाँ चला जाता है। तुम्हारा फिर मेहतरपना है भार खाने का। अच्छा, तुम्हारा तो बड़ा ही मज़े का ज्ञान है। नॉलेज से ही खुशी होती है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

प्वाइंट्स :- ईश्वरीय मत और मनुष्य मत। ईश्वरीय मत से तुम देवता बनते हो। 21 जन्म बाद फिर मनुष्य मत लेते हो। मनुष्य मत, देवता मत और ईश्वरीय मत। ईश्वरीय मत मिलती है संगम पर, जिससे तुम देवता बनते हो। वहाँ तो सुख ही सुख है। देवता मत का वर्णन किया जाता है। ईश्वरीय मत, मनुष्य मत से देवता मत बनाती है। मनुष्य मत है रावण की मत। एक मानव मत का पंथ भी चलता है। देहली में एक पुराना जज सुहेना है उसने मानव मत स्थापन किया है। दैवी मत तो स्थापन कर न सके जबकि ईश्वरीय मत न मिली है। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं। ऐसी-2 बातें, शास्त्र पढ़े हैं तो सिद्ध कर सकते हैं। फलाने वेद में यह बातें हैं। ज्ञान से टैली होता है। पढ़े हैं तो वह आधार भी लेते हैं। मुख्य बात है एक ही मन्मनाभव। गीता ही भारत का मुख्य धर्मशास्त्र है जिस द्वारा ही देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। इनको गीता का एपिसोड कहा जाता है। तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। बहुत प्यार से चलना है। अभी तुमको ईश्वरीय मत मिलती है। बाप कितना सहज समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। अभी वापस चलना है। जो यहाँ सुखी हैं वह बाप को याद भी नहीं करते। बाप कह ..... है। साहुकार गरीब, गरीब साहुकार बनेंगे। पिछाड़ी में माया के राज्य में आवेंगे। तुमको 21 जन्म का सुख मिलता है। बाबा ने बूट पुराना लिया है। तुम भी पूरा बूट खरीद कर देखो।